गुरु नानक – सबद ९
जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥
जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥
नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥
चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥
जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥
कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥
नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥
तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥

सार: अगर प्रकृति के सभी आयाम के साथ सहभागिता का अभ्यास न किया जाए तो सभी उपलब्धियाँ बेकार हैं । मानव अस्तित्व की सब से सर्वोत्तम क्षमता स्वयं को एकता की सर्वोच्च वास्तविकता से पहचान कराना है।

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥
अगर कोई समय के चार पौराणिक युगों या उससे भी दस गुना अधिक समय तक जीवित रह सकता हो।

नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥
अगर कोई व्यक्ति सभी महाद्वीपों पर एक प्रसिद्ध व्यक्तित्व होता और हर कोई उसकी पैरवी करता।

चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥
अगर किसी की अच्छी प्रतिष्ठा हो और उसने दुनिया भर में प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त किया हो।

जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥
अगर किसी ने एकता के बारे में जागरूकता हासिल नहीं की है, तो जो कुछ भी हासिल किया गया है वह किसी कामयाबी के लायक़ नहीं है।

कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥
यह सबसे घृणित अपराधियों में सबसे तुच्छ कीड़े के रूप में अवमानना किये जाने के बराबर है।

नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥
नानक कहते हैं कि आध्यात्मिक ज्ञान, अज्ञानी को चेतना और गुणी लोगों को सद्गुण प्रदान करता है।

तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥
केवल सर्वव्यापी चेतना सद्गुण को साँझा करने और आत्मसात करने की सहज क्षमता रखती है।(७)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि भीतर रहने वाली सर्वव्यापी चेतना के अलावा कोई भी उस प्राचीन ज्ञान को प्रदान नहीं कर सकता जो सृष्टि की एकता के बारे में जागरूकता पैदा करती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com